

# हे जगत्राता विश्वविधाता

रबीन्द्रनाथ टैगोर

हे जगत्राता विश्वविधाता  
हे सुख शान्ति निकेतन हे

प्रेम के सिन्धु दीन के बन्धु  
दुःख हरिद्र विनाशन हे  
नित्य अभन्त अनन्त अनादि  
पूरन ब्रह्म सनातन हे

जग आश्रय जग पति जग वन्दन  
अनुपम अलभ निरन्जन हे  
प्राण सभा त्रिभुवन प्रति पालक  
छवन के अवलम्बन हे